ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-12*January- 2022
Innovation The Research Concept

भारतीय जनजातीय नृत्य: जनजातीय आर्थिक-सांस्कृतिक व्यवस्था के परिलक्षक

Indian Tribal Dances: Identifiers of Tribal Eco-Cultural System

Paper Id: 15687, Submission Date: 10/01/2022, Date of Acceptance: 20/01/2022, Date of Publication: 24/01/2022

कामना विमल शर्मा
सहायक प्रवक्ता,
संस्कृत विभाग,
दौलतराम महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

सारांश

समस्त विश्व में जनजातियां संस्कृति और परम्पराओं के संवहन का दायित्व निभाती हैं। जनजातीय विविधता भारत की अनन्यतम विशेषता है। नृत्य और संगीत भी भारतीय जनजाति संस्कृति के महत्वपूर्ण पहलू हैं। नृत्य और संगीत मुख्य रूप से देवी और देवताओं का प्रचार करने के लिए होते हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त भी नृत्य और संगीत मानव के आरम्भिक और वर्तमान जीवन के विषय में ज्ञान के स्रोत हैं। प्रत्येक जनजाति के नृत्य और संगीत का अपना विशिष्ट स्वरूप है। भारतीय जनजाति नृत्य आज दूर के अतीत और वर्तमान के बीच निरंतरता का सूत्र प्रदान करते हैं।

The tribes In the whole world are the bearers of cultures and traditions. Tribal diversity is the uniqueness of India. Dance and music are also significant aspects of Indian tribal culture. Dance and music are primarily for promoting the deities . But apart from this, dance and music are also sources of knowledge about the early and present life of man. Each tribe has its own distinctive form of dance and music. Indian tribal dances today provide a thread of continuity between the distant past and the present.

मुख्य शब्द: जनजाति, नृत्य, संगीत, लोक, संस्कृति
Keywords: Tribal, Dance, Music, folk, Culture.

प्रस्तावना

भारत की पारंपरिक संस्कृति में, मनुष्य का पूरा जीवन नृत्य और संगीत की मधुर ध्वनि के चक्र से आवृत्त है। यह लोक परंपरा भारत की संस्कृति का एक बड़ा स्रोत रही है, जो सहजता से समृद्ध है। भारत का लोक संगीत और नृत्य देश की उदारता, माधुर्य, सौंदर्य मूल्यों और देहाती लोकाचार का प्रतिनिधित्व करते हैं। मंदिर के त्योहारों और सामुदायिक कार्यों के अवसरों पर लोक नृत्य और संगीत का आयोजन मानव मात्र के लिए मनोरंजन और आनंद के साथ ही सामाजिक प्रतिष्ठा का अवसर प्रदान करता है। नृत्य और गीत प्रकृति में मौसमी लय का उत्सव मनाते हैं। यह उत्सव के समय में आनंद की एक सहज अभिव्यक्ति है। यह हल चलाने वाले आदमी और नाविक, चरवाहे और ऊंट चालक के गीत और उनके काम की लय में सामंजस्य जोड़ते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य -

भारतीय जनजातीय नृत्य के स्वरूप के अध्ययन के आधार पर जनजातीय आर्थिक-सांस्कृतिक व्यवस्था के विकास को समझना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

नृत्य की अवधारणाएँ और परिभाषाएँ

मार्टिन जॉन के अनुसार, "नृत्य भावनात्मक ऊर्जा का मांसपेशियों के गतिविधि के माध्यम से एक प्रकटीकरण है।" यह न केवल पुरुषों द्वारा हर अवस्था, हर सभ्यता और संस्कृति में अभ्यास किया जाता है, बल्कि कई प्रकार के जानवरों, विशेषकर पक्षियों द्वारा भी नृत्य भावनाओं के प्रदर्शन का एक प्रमुख साधन है। इसका उद्देश्य आम तौर पर व्यक्ति विशेष की अभिव्यक्ति के तर्कसंगत साधन के द्वारा अनुभूत अवधारणाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति कहा जा सकता है।

वर्ल्ड बुक इनसाइक्लोपीडिया (1983) में उनके लेख में, ओडम सेल्मा ने, "प्रायः संगीत के साथ लय में शरीर को हिलाने की क्रिया" के रूप में नृत्य को परिभाषित किया है। नृत्य कला और मनोरंजन का एक रूप है। एक कला के रूप में एक नृत्य एक कथा, विशिष्ट मनोदशा अथवा भावना को व्यक्त करता है। मनोरंजन के रूप में नृत्य सदैव ही आनंद, विश्राम, और साहचर्य का प्रमुख माध्यम रहा है।

नृत्य लोक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा रहा है। भारतीय लोक नृत्य का प्राथमिक आवेग लय है - विचार-विमर्श के समय में आनंद की एक सहज अभिव्यक्ति। ढोल की साधारण ताल से लेकर संस्कारित कला की जटिल लय तक, यह लय का प्रेम है जो नृत्य का निर्माण करता है। लोक नृत्य और किसानों के गीतों के माध्यम से पहाड़ी लोक और जनजातीय लोग अपने सरल सांप्रदायिक जीवन में खुशी और मनोरंजन लाते हैं। लोक नृत्य और नाटक जिनकी जड़ें धार्मिक और मौसमी त्योहारों में होती हैं उनकी अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होती है और ये भारत की कलात्मक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। भारत के कुछ लोकप्रिय लोक नृत्य गरबा, भांगड़ा, बिहू और यक्ष गान हैं।

मध्यकालीन भारत के संस्कृत साहित्य में समूह नृत्यों के कई रूपों का वर्णन किया गया है: चरचरी, हल्लीसाका या होलिसाका, तलाई-रासका और डंडा-रासाका।
चरचरी एक नृत्य था जिसमें लड़कियों ने जोड़े और समूह में प्रवेश करते थे, साथ के संगीत की ताल को चिह्नित करने के लिए डंडों के साथ नृत्य करते थे। राजाओं के सम्मान में वसंत में चरचरी नृत्य किया जाता था। बृंदावन (भगवान कृष्ण का बचपन निवास) के बृजवासी होली, वसंत आदि त्योहारों के अवसरों पर मंदिरों और में चरचरी नृत्य करते हैं।
होलिसाका एक चरवाहों का नृत्य था, जो राजाओं के राज्याभिषेक जैसे विशेष अवसरों पर किया जाता था। यह एक पुरुष के नेतृत्व में महिलाओं का एक गोलाकार नृत्य था, एक नृत्य जिसमें स्त्री - पुरुष दोनों भाग लेते थे। एक किंवदंती के अनुसार होलिसाका भगवान कृष्ण के साथ एक गोपी (भगवान कृष्ण की पत्नी) का नृत्य है। इसे रसकोर रास के रूप में जाना जाता है। रास का मतलब एक चक्र भी होता है।
रासक या रास नृत्य दो प्रकार के होते हैं। तलाई-रसाक, हाथों की लयबद्ध ताली और डंडा-रसाक जिसमें प्रत्येक नर्तक लाठी (डंडा) के साथ ताल को चिह्नित करता है।

जनजातीय नृत्य

मनुष्य ने हमेशा अपनी भावनाओं को गतिरूप में अभिव्यक्त किया है, और नृत्य एक अंकन है मनुष्य की भावनात्मक अभिव्यक्तियों के सबसे स्वाभाविक रूप का। कई अनुष्ठान नृत्यो के पीछे यह विश्वास है कि नृत्य जीवन के संकटों का सामना करने, सहने और उनपर विजय पाने का एक साधन है। यही फसलों को प्रोत्साहित करना या बीमार आत्मा और शरीर को ठीक करने का साधन भी है और नृत्य के माध्यम से आदमी अपने देवताओं से सीधे बात भी कर सकता है।

जैसा कि कैवेंडिश ने कहा था नृत्य के उन्माद में मनुष्य इस दुनिया और दूसरी दुनिया के बीच के आकर्षण को, राक्षसों, आत्माओं और देवताओं से संबंध को और सारी दुनिया के साथ समय के साथ होने का अनुभव करता है। नृत्य, अपनी गतिविधियों में इन शक्तियों का हिस्सा बन जाता है जो मनुष्य की क्षमता से परे है और अनेक रूप धारण कर लेता है। यह एक बलिदान संस्कार, एक आकर्षण, एक प्रार्थना और एक भविष्यदृष्टा बन जाता है। यह प्रकृति की शक्तियों का आह्वाहन और उनका प्रयोग करके बीमारों को ठीक करता है, मृतकों से जोड़ता है उनके वंशजों की श्रृंखला, यह जीविका, दौड़ में भाग्य, युद्ध में विजय, यह खेतों को आशीर्वाद और जनजातियों को आश्वासन देता है। यह एक निर्माता, संरक्षक और अभिभावक है। नृत्य रूपों में प्रतीकवाद एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न होता है।

भारत विविध जातियों, जनजातियों और संस्कृतियों से समृद्ध है। जनजातियों में प्रचलित नृत्य जनजातीय नृत्य कहलाते हैं। जनजाति से अभिप्राय है जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में में रहने वाली जातियां जो अभी भी समाज की मुख्य धारा से पूर्ण रूप से नहीं जुड़ी हैं। इन्हे वन्यजाति अथवा आदिवासी भी कहा जाता है क्योंकि ये अभी भी सभ्यता के आदिम स्वरूप में ही हैं। भारतीय जनजातियाँ मूलतः वनवासी हैं और भारत के हर क्षेत्र में पाई जाती हैं। भारत की कुछ लोकप्रिय जनजाति नृत्य संथाली, गौर और लावा हैं। इनमें से प्रत्येक जनजाति अपनी सांस्कृतिक विशिष्टताओं के कारण, दूसरों से अलग, चिह्नित है। यह विविधता न केवल उनके सामाजिक-आर्थिक जीवन में बल्कि धार्मिक समारोहों, रीति-रिवाज़ों और परम्पराओं में भी स्पष्टतया दिखाई देती है। विशेष रूप से जनजातीय नृत्य किसी भी जनजाति के जीवन और मान्यताओं को परिभाषित करने में सक्षम हैं।

भारत के उत्तरी भाग की जनजातियाँ, हिमालय पर फैली हुई, घुमंतू चरवाहों से लेकर आदिम खेती तक, उत्तर-पूर्व के मंगोलियाई जनजातियों, बस्तर और छोटा नागपुर के घने जंगलों की जनजातियों और दक्षिण भारत की जनजातियों - सभी जनजातियों में सामान्यजीवन पर आधारित - शिकार, मछली पकड़ने, भोजन एकत्र करने और पशुपालन की गतिविधियों पर नृत्य प्रचलित हैं। मैदानी इलाकों और घने जंगल वाले पठार के नृत्यों में, कोई भी व्यक्ति जीवन के जनजातीय तरीके के उत्साह और साहस को देख सकता है। बस्तर के गोंड और मारिया, छोटानागपुर के उरांव और संथाल सभी के पास समुदाय नृत्य की एक समृद्ध विरासत है।

जनजाति संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण पहलू संगीत और नृत्य हैं। जब तक वे नृत्य और संगीत में विशेष कौशल हासिल नहीं कर लेते, तब तक कुछ जनजातियों के युवक दुल्हन नहीं ढूंढ सकते। नृत्य और संगीत मुख्य रूप से देवी और देवताओं का प्रचार करने के लिए होते हैं। शादी और दावत जैसे सामाजिक कार्यों में, नृत्य गांव के एक केंद्रीय स्थान या सांप्रदायिक घर में किया जाता है और लगभग सभी जनजातियों द्वारा भाग लिया जाता है। प्रत्येक जनजाति के नृत्य और संगीत का अपना विशिष्ट स्वरूप है। जनजाति नृत्य आज दूर के अतीत और वर्तमान के बीच निरंतरता का सूत्र प्रदान करते हैं।

जनजातीय नृत्य के उद्देश्य

ज्यादातर लोग केवल मनोरंजन करने या दूसरों का मनोरंजन करने के लिए नृत्य करते हैं। कुछ व्यक्तियों के लिए, नृत्य संचार और रोमांस का सबसे व्यक्तिगत और प्रभावी साधन प्रदान करता है। लोग सफलता, फसल, उपलब्धियों आदि को मनाने के लिए नृत्य करते हैं। मानव इतिहास में, पूजा में नृत्य का उपयोग किया गया है। नृत्य अक्सर प्रतिभागियों के बीच एकता की भावना पैदा करने का कार्य करता है। लोग राक्षसों, आत्माओं और देवताओं का आह्वान करने के लिए नृत्य करते हैं। पिछले इतिहास या मिथक को फिर से बनाने के लिए नृत्य किए जाते हैं। ओडम सेल्मा ने कहा कि, सामाजिक वैज्ञानिकों का मानना है कि नृत्य ने शिकार और पूर्व ऐतिहासिक जीवन की कई अन्य गतिविधियों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी।

नृत्य के आदिम रूप

जनजातीय समाज में नृत्य जीवन की हर गतिविधि में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्राकृतिक घटनाओं के रहस्य से प्रभावित आदिम पुरुषों ने एक व्यक्ति के जीवन में किसी भी महत्व के हर कार्यक्रम को उन प्राकृतिक शक्तियों को प्रसन्न करने के उद्देश्य से मनाये जाने वाले जनजाति समारोह के रूप में मनाना आरंभ कर दिया जो संरक्षण या समर्पण के अनुष्ठानों वाले धार्मिक और साथ ही सामाजिक उत्सव के रूप में परंपरा में शामिल हो गया। ये उत्सव विशुद्ध रूप से जनजाति महत्त्व और खुशी या शोक के व्यक्तिगत भावो का प्रदर्शन होता है। आदिम लोगों के जीवन का कोई भी अवसर नृत्य के बिना अकल्पनीय है जन्म, खतना, और युवतियों का संरक्षण, विवाह, मृत्यु, रोपण और कटाई, सरदारों का उत्सव, शिकार, युद्ध और भोज, चंद्रमा के परिवर्तन और बीमारी - इन सभी के लिए नृत्य की आवश्यकता है। साररूप में नृत्य जनजातीय जीवन ही है।

जनजाति लोक संगीत और नृत्य

अपनी पुस्तक "भारतीय जनजातीय संस्कृति" में विद्यार्थी एल.पी. और राय बिनय ने कहा है, कि आदिवासियों के लोक गीत, संगीत और नृत्य समग्र रूप से एक हैं, जो उनकी संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। वे कहते हैं कि जनजाति लोकगीत लय और संगीत के लिए जाने जाते हैं और प्रयोग में संगीत का पक्ष बहुत अधिक होता है। एक कला और मनोरंजन के साधन के रूप में, नृत्य आनंद, विश्रान्ति और साहचर्य प्रदान करता है।

जनजाति लोग एक गाने की चार से आठ पंक्तियों को लोक संगीत की मदद से एक साथ घंटों तक गाते हैं। ये भावनाओं को व्यक्त करने वाली सरल आकर्षक लोक-धुनें उनके पूर्वजों, उनके जीवन और विचारों, उनकी गतिविधियों और उपलब्धियों, उनकी नैतिकताओं और अनुशासन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।'

जनजाति लोक गीत कई तरह के होते हैं। ये जीवन-चक्र के गीत हैं, जिन्हें अलग-अलग गाया जाता है जन्म, विवाह और मृत्यु जैसे अवसरों पर गए जाने वाले गीत, नैतिक गीत, विचारशील गीत, अलग-अलग मौसम जैसे वसंत, बारिश आदि से संबंधित गीत, सामयिक गीत, त्योहारों और धार्मिक अनुष्ठान के समाया पर देवताओं को प्रसाद लगाने के गीत। फिर हैं काम करने वाले गाने जो काम को व्यवस्थित करने में मदद करते हैं। ओराओं और मुंडाओं का थुमर जो धान की रोपाई के समय गाए जाते हैं और कई शिल्प गीत हैं जिनमें चटाई बनाना, जुताई, टोकरी बनाना, आदि शिल्प सरल लोकगीतों में वर्णित हैं।

जहां तक जनजाति नृत्यों के वर्गीकरण का संबंध है, गठन के आधार पर जनजाति लोक नृत्यों को दो विभागों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

समूह नृत्य

समूह नृत्यों में, नर्तक एक दूसरे से एक निश्चित तरीके से - हाथ, कमर या कंधों से - जुड़े होते हैं। ये नृत्य ज्यादातर हिमालयीय और मध्य भारतीय जनजातियों में प्रचलित हैं। एक चक्र या स्तंभ के आकार में किये जाने वाले जनजातीय नृत्य सबसे अधिक प्रचलित हैं। चक्रीय नृत्य नाम से जाने जाने वाले नृत्य प्रायःस्त्री - पुरुष दोनों के द्वारा किये जाते हैं। स्तंभ नृत्य परिवर्तनशील होते हैं हैं, उनकी चाल अधिक जटिल और गति अधिक नियमित होती है।

युगल नृत्य

वे या तो स्तंभ निर्माण में हैं या बिना किसी विशेष गठन के। आम तौर पर स्त्री और पुरुष जोड़ों के रूप में गोलाकार आकृति में घूमते हैं लड़कियाँ मध्य में घूमती हैं और पुरुष उनके चारो ओर चक्कर लगते हुए नृत्य करते हैं। युगल नृत्यों में, सबसे महत्वपूर्ण नृत्य - यात्रा और छऊ हैं जो विशेष रूप से बंगाल और बिहार में प्रचलित हैं।

एकल नृत्य

ये एकल नर्तक द्वारा किये जाते हैं। यह जनजाति क्षेत्रों में बहुत आम नहीं है। अय्यर कृष्णा और रत्नन बाला ने नृत्य किये जाने के उद्देश्य और अवसर के आधार पर जनजाति नृत्य को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है -

1. युद्ध और शिकार नृत्य,
2. पवित्र नृत्य, और
3. सामाजिक नृत्य।

युद्ध और शिकार नृत्य इस प्रकार से संबंधित नृत्य केवल कुछ ही जनजातियों में प्रचलित हैं। खासी और नागा जनजातियां अपने मार्शल डांस के लिए जानी जाती हैं। नागा जाति का प्रसिद्ध शिकार नृत्य जिसमे मानव शीश का शिकार का प्रदर्शन किया जाता है, जनजातीय लयबद्ध स्वरों पर एक पूर्ण युद्ध के रंग में - शिकारी, और शिकार के बीच जीवन के संघर्ष का प्रदर्शन करता है । यह सामुदायिक भावना को दर्शाता एक समूह नृत्य है। युद्ध के नृत्य मुख्यतः गारो, भीलों और ओरों जनजातियों में प्रचलित हैं। -

पवित्र नृत्य आदिवासियों में पवित्र नृत्य शायद सबसे आम है। किसी पवित्र मूर्ति, पवित्र वेदी, पवित्र बलि, पवित्र पेड़ या एक पवित्र कुँए के चारों ओर अनुष्ठान रूप में किये जाने वाले इन नृत्यों का उद्देश्य धार्मिक कृत्यों के लिए उचित वातावरण तैयार करना और दैविक शक्तियों और पूर्वजों की आत्माओं की इच्छाओं को पूरा करने में सहायक होना होता है।

सामाजिक नृत्य ये नृत्य ऋतुओं, त्योहारों, विवाह, अंतिम संस्कार आदि से सम्बंधित होते हैं।

विवाह नृत्य संथाल, हो, भुइया और कई अन्य जनजातियों के विवाह नृत्य सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।

अंतिम संस्कार नृत्य एक व्यक्ति की मृत्यु पर नृत्य किया जाना कई जनजातियों में प्रचलित है। बड़गास में, शोक प्रदर्शन करने के लिए लाश के चारों ओर काटा बैंड के संगीत के साथ नृत्य किया जाता है, मालेर के पास, पहले तीन चक्करों के दौरान सम्मान के निशान के रूप में उनकी पगड़ी उतारने वाले संबंधी होते हैं। ज्यादातर पुरुष नर्तक भड़कीले वस्त्र और पगड़ी पहनते है।

जनजाति नृत्यों के वर्गीकरण के आधार

गठन जैसा कि जनजाति संरचनाओं के आधार पर विद्यार्थी और राय (1979) ने स्पष्ट किया है नृत्य को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. समूह नृत्य
2. युगल नृत्य
3. एकल नृत्य।

सांस्कृतिक अवसर या घटना आधारित नृत्य जनजाति नृत्यों को भी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक अवसरों या आयोजन के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए,

उत्सव नृत्य संथालों, भीलों, लावारा, ओराओं, आदि के बीच पाया जाता है।

विवाह नृत्य भील, गोंड, दुबला, ढोडिया जनजातियों में प्रचलित है।

अंतिम संस्कार नृत्य माडिया, गोंड, आदि जनजातियों में प्रसिद्ध हैं ।

परिवार या सामुदायिक अनुष्ठान नृत्य अधिकांश जनजातियों में पारिवारिक या सामुदायिक अवसरों पर इन नृत्यों को करने की प्रवृति प्राप्त होती है।

1. उत्पादक, निवारक, प्रचारक और से जुड़े जनजाति नृत्य विनाशकारी जादू / अनुष्ठान।
   जनजाति नृत्यों को उत्पादक, निवारक, प्रचार और विनाशकारी अनुष्ठानों के साथ जोड़ा जाता है।प्रत्येक जनजाति में कम से कम एक इस प्रकार का आनुष्ठानिक नृत्य प्राप्त होता है ।
2. उत्पादक से तात्पर्य है फसलों, पौधों, जानवरों और मानवप्राणियों की प्रजनन क्षमता का अनुष्ठान।'
3. निवारक अनुष्ठान किसी व्यक्ति, परिवार, किसी समुदाय या गांव को बीमारियों, बीमारी से बचाना और दुर्भाग्य निवारण की विधियां और औपचारिक क्रियायें हैं।
4. प्रचार अनुष्ठान ये कार्य या विधियां हैं जो किसी व्यक्ति, परिवार, समुदाय या गांव का विकास और कल्याण एवं स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए की जाती हैं।

विनाशकारी अनुष्ठान औपचारिक रूप से किये जाने वाली क्रियाएं या अनुष्ठान जिसका उद्देश्य बुराई को नष्ट करना है इस श्रेणी के अंतर्गत आता है।

नृत्य के दौरान प्रयोग में आने वाले मुख्य वाद्ययंत्र के आधार पर गुजरात और महाराष्ट्र के वार्लिस का तिरपा नृत्य कहा जाता है क्योंकि इस नृत्य के दौरान "तारपा" वाद्ययंत्र बजाया जाता है। ठक्कर, कोकनास, वार्लिस, कटकारिस, महादेव कोली जनजातियों का 'ढोल' नृत्य नृत्य के दौरान ढोल (ढोल) बजाने के कारण ऐसा कहलाता है।डबला और ढोडिया जनजातियों के तूर और थाली नृत्य भी इस श्रेणी के अन्य उदाहरण हैं

संबंध नवीकरण नृत्य

अधिकांश जनजाति समुदाय अपने पूर्वजों की आत्माओं के साथ रिश्ते को नवीनीकृत करने के लिए वर्ष में एक बार नृत्य अनुष्ठान करते हैं "पितृ अमोशा" के अवसर पर किये जाने वाला ठक्कर और कटारियों का धाम्बडी नृत्य इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। गोंडों का डंबडा नृत्य, जिसे 60-70 वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त होने वाले व्यक्ति की मृत्यु के 15-20 वर्षों के बाद उसकी आत्मा के अपने परिवार से मिलने के अवसर पर किया जाता है।

आयु और लिंग आधारित नृत्य

यह भी देखा गया है कि कुछ जनजाति समाजों में कुछ नृत्य विशिष्ट आयु अथवा लिंग के लिये निर्धारित होते हैं। ठक्करों, वार्लिस और कटकारियों के मध्य प्रचलित 'गौरी' नृत्य में केवल युवाओं द्वारा प्रदर्शन किया जाता है, जबकि ठक्कर और कटकारियों जनजातियों के ही धामी नृत्य को केवल वृद्धजनों द्वारा किया जाता है। इसी तरह ऐसे नृत्य हैं जो विशेष रूप से लिंगाधारित हैं जैसे कुकन जनजाति के ढोल नृत्य में केवल पुरुषों द्वारा नृत्य किया जाता है। जनजाति नृत्य और संगीत में अधिकांश संगीत वाद्ययंत्र पुरुषों द्वारा ही बजाये जाते हैं।

मिथक प्रदर्शन नृत्य

जनजाति नृत्य सांस्कृतिकरण और समाजीकरण के माध्यम के रूप में युवा पीढ़ी को रीति-रिवाज और परंपराएं भी सिखाते हैं। नृत्य मौखिक परंपरा से परंपराओं को प्रसारित करने का एक प्रभावशाली माध्यम है। नृत्य संरचनाओं और गतिविधियों के माध्यम से मिथकों को वास्तव में पुनर्निर्मित किया जाता है। डबल्स, और वार्लिस का काम्बड नृत्य इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

पारंपरिक नृत्य नाटक

महाराष्ट्र के महादेव कोलियों के मेवाड और तमस्यु के भीलों का गवरी नृत्य गायन, नृत्य और नाटक के संयुक्त रूप हैं जिनका उद्देश्य है युवा पीढ़ी का समाजीकरण करना।

पराक्रम एवं शक्ति प्रदर्शन नृत्य

नागाओं, भीलों और ओरों के युद्ध और शिकार नृत्य इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं जनजाति नृत्य अपनी जनजाति के वीरों के द्वारा किये गए वीर कर्मों के चित्रण के माध्यम से युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित करते हैं और अपनी संस्कृति से जोड़े रखते हैं।

भोजन संग्रहण अथवा एकत्रीकरण सम्बन्धी नृत्य

वन निवास जनजातियों में आमतौर पर इस प्रकार के नृत्य होते हैं, जिसमें ऐसी गतिविधियां या क्रियाएं होती हैं जिनमें भोजन एकत्र करना दर्शाया जाता है। कोलम्स का घोरपाद नृत्य एक सरीसृप के शिकार का चित्रण है, तो भीलों का 'शिकारी डांस' - मधुमक्खी का ।

विभिन्न जनजातियों द्वारा किये जाने आने समूह नृत्य

यद्यपि जनजातियां प्रायः परस्पर असम्बद्ध और सांस्कृतिक रूप से विलक्षण होती है परन्तु वर्त्तमान समय में विभिन्न जनजातियों में पारस्परिक सांस्कृतिक आदान प्रदान देखा जाता है । कुछ सामूहिक कार्यक्रमों में एक से अधिक जनजातियों की भागीदारी सामान्य रूप से द्रष्टव्य है। उदाहरण के लिए, बोहाडा नृत्य कोकनास, वार्लिस, मल्हार कोलिस, महादेव कोलिस, ठक्कर द्वारा मिलकर किया जाता है। तो ऐसा ही है ठककारों के ढोल और कम्बड़ नृत्यों के साथ, जिसमें कोकनास और वार्लिस भाग लेते हैं। इन अंतरजनजातीय नृत्यों का उद्देश्य अंतर-जनजातीय सामुदायिक सद्भाव या एकजुटता को बढ़ावा देना है।

जनजाति-जाति नृत्य और संगीत प्रदर्शन

मैदानी इलाकों में रहने वाले जनजातीय समाज अनेक कारणों से कृषिकार्य करने वाली और अन्य जाति समुदायों से सामाजिक और आर्थिक रूप से परस्पर क्रिया करते रहे हैं । इससे जनजातियों और जातियों के मध्य सम्बन्ध स्थापित होते हैं। इन्ही संबंधों में से एक है जनजाति - जाति नृत्य जिसमें दोनों ही ओर के व्यक्ति भाग लेते हैं मुख्यतः विवाह और त्यौहार के अवसरों पर किये जाने वाले नृत्य इस प्रकार के होते हैं। यवतमाल के आन्ध्र अपने गाँव में रहने वाले महारों और मानगो के साथ नृत्य करते है।

पशु व्यवहार का प्रदर्शन करने वाले नृत्य

कबुई नागाओं के बीच पशु - पक्षी व्यवहार को चित्रित करने के लिए नृत्य किए जाते हैं जिसमे नर्तक कीड़ों और पक्षियों की नक़ल करता है। मधुमक्खी और किरकिट नृत्य इसके सबसे अच्छे उदाहरण हैं, जो भोजन (शहद) की खोज करती मधुमक्खियों का व्यवहार और किरकिट्स द्वारा किये गये शोर को दर्शाते हैं। कबुई पक्षी के व्यवहार को चित्रित करने के लिए हॉर्न बिल (लैंगडाई लेन) नृत्य भी करते हैं।

ऋतुसम्बन्धी नृत्य

प्रकृति के सान्निध्य में रहने वाले जनजातीय समाजों में सबसे अधिक प्रचलित नृत्य ऋतुओं से सम्बंधित होते हैं होली — अग्नि का उपजाऊ होना वसंत या गर्मियों की शुरुआत का प्रतीक है। यही समय है, जब जनजाति खेती के लिए जमीन तैयार करना शुरू करते हैं, तो बारिश का व्यवहार का भविष्यवाणी करने के लिए प्रयोग करते हैं। इसलिए, वसंत का स्वागत करने के लिए जनजाति नृत्य करते हैं। भील, पवार जनजाति हैं जो मौसमी नृत्य करते हैं। गर्मियों की तरह ही अन्य ऋतुओं का स्वागत करने के लिए भी जनजातियों में अनेक नृत्य पाए जाते हैं।

जनजातीय नृत्य - सांस्कृतिकरण और समाजीकरण के माध्यम

जनजाति समाजों में नृत्य सांस्कृतिकरण और समाजीकरण के माध्यम होते हैं, जिसमें दोनों प्रतिभागियों के साथ-साथ दर्शक भी संस्कृति सहित उनके कई पहलुओं को सीखते हैं:

1. नृत्य के प्रकार और उनसे जुड़े सभी अनुष्ठान और समारोह।

2. गीत और उनका अर्थ।
3. सृजन मिथक।
4. अंतर-जनजाति और अंतर-जातीय संबंध।
5. साथी प्राप्त करने के तरीके।
6. संगीत वाद्ययंत्र बजाना।
7. ये और संस्कृति के कई अन्य पहलू जो युवा पीढ़ी में सामाजिक रूप से प्रसारित होते हैं। जनजाति गांवों में नृत्य जनजाति संस्कृतियों के बारे में बहुत कुछ बताते हैं। यहां तक कि अगर कोई गाए गए गीतों का विश्लेषण करता है तो वह उस जनजाति के मूल में और कई पहलुओं को प्राप्त कर सकता है।

समान आर्थिक-सांस्कृतिक व्यवस्था, समान नृत्य रूप

एक सामान्य पारिस्थितिक और सामाजिक वातावरण में रहने वाली जनजातियाँ समान नृत्य परंपराओं का प्रदर्शन करती हैं । यह जनजाति समुदायों के पारस्परिक दीर्घकालिक सामाजिक संपर्क के तथा संगीत, धुन और लय के आदान-प्रदान के कारण है। इस प्रकार, महाराष्ट्र, गुजरात के वार्लिस के बीच प्रचलित 'तारपा नृत्य' मल्हार कोलीस द्वारा कोकना (पावरी नृत्य के रूप में), धोरकोलिस, आदि द्वारा भी किया जाता है इसी तरह 'बेहड़ा' - मुखौटा नृत्य ठक्कर, कोकनास, वार्लिस, भीलों, मल्हार कोलिस और अन्य ठाणे की जनजातियो द्वारा किया जाता है। रेला नामक मड़िआ जनजाति द्वारा प्रस्तुत नृत्य गोंड, कोलम, राजगोंड, इत्यादि जनजातियों द्वारा और पैतृक आत्माओं को खुश करने के लिए धामड़ी नृत्य ठक्कर और कातकारियों द्वारा संपादित किया जाता है।

नृत्य रूपों में विविधताएं

नृत्य राज्य एवं जनजाति की सीमा से कहीं विस्तृत और असीमित है यही कारण है कि एक ही जनजाति के पारम्परिक नृत्य भी विभिन्न राज्यों और भिन्न आर्थिक- सांस्कृतिक परिस्थितियों में भिन्नता प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, भील जनजाति जो भौगोलिक रूप से राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश और में पाए जाते हैं, वे महाराष्ट्र में रहने वाले भील जनजाति के लोगों से भिन्न प्रकार के नृत्य करते हैं। राजस्थान के भील लटुई (छड़ी) नृत्य करते हैं, जो महाराष्ट्रीयन भील जनजाति में नहीं मिलता है। इसी प्रकार राजस्थान के भीलों में चिबली (विवाह की टोकरी) नृत्य भी प्रचलित नहीं है।
दूसरी बात यह है कि शिकारी नृत्य. जो सामान्यतः सभी भीलों के समुदायों में प्रचलित है. वह भी विभिन्न राज्यों में बहुत भिन्नता के साथ किया जाता है। इस नृत्य में महाराष्ट्र में भीलों एक अथवा दो तलवारों और धनुष-बाण का प्रयोग करते हैं, जबकि राजस्थान में प्रत्येक शिकार नृत्य करने वाले नर्तक के पास तलवार है या धनुष और तीर होते हैं। गोंड, खोंड, संथाल, उरांव जैसी जनजातियाँ जो एक से अधिक राज्यों में रहती हैं उनके नृत्य रूपों में बहुत विविधता और भिन्नता देखी जाती है।'

निष्कर्ष

जनजातीय नृत्यों को प्रोत्साहित एवं सम्मानित करने के प्रयास - जनजाति अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान और जनजातीय विकास विभाग ने जनजातीय समुदायों के मध्य प्रतियोगिताओं को प्रोत्साहित करके जनजाति नृत्यों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, फिल्मों, स्लाइड्स और तस्वीरों इत्यादि का उत्पादन, जहाँ तक एनजीओ का संबंध है, कुछ वे इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं। हालांकि, और अधिक करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मार्टिन, जॉन 1968. पृ. 701*
2. *ओडम सेल्मा: वर्ल्ड बुक इनसाइक्लोपीडिया 1983, पृ.18*
3. *कैवेंडिश:1983, पृ.589*
4. *ओडम सेल्मा: वर्ल्ड बुक इनसाइक्लोपीडिया 1983, पृ.18*
5. *Sachs, C: Work history of the dance, 1963, पृ. 215*
6. *विद्यार्थी एल.पी. और राय बिनय: भारतीय जनजातीय संस्कृति, 1979, पृ.330*
7. *वही, 1975, पृ.230*
8. *वही, 1975, पृ.230*
9. *अय्यर कृष्णा और रत्नन बाला, 1961, पृ.210*
10. *दास, शिवतोष: भारत की जनजातियां, किताबघर, दिल्ली, १९८३*
11. *Iyer, Krish*
12. *Vidyarthi, L. P. and Rai, B. K. The tribal culture of India, Concept Publications Company, Delhi, 1977*
13. *Sachs, C: Work history of the dance, W. W. Norton & Company, New York, 1963.*
14. *Martin, John: Introduction to the Dance Journal of Aesthetics and Art Criticism 26 (3), 1968, p. 399-400*